अध्याय 16: सपनों के-से दिन

विषय-सूची		1 प्रश्नावली · 9 प्रश्न
प्रश्नावली 2.1	बोध-प्रश्न	9 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — बोध-प्रश्न

प्रश्न 1

कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती—पाठ के किस अंश से यह सिद्ध होता है?

हल

पाठ में लेखक बताता है कि उनके साथ खेलने वाले अधिकतर साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में बसे परिवारों के थे।

जब वे बहुत छोटे थे तो उनकी बोली कम समझ पाते थे और उनके कुछ शब्द सुनकर हँसी आने लगती थी।

परंतु खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते थे—'परंतु खेलते तो सभी एक-दूसरे की बात खूब अच्छी तरह समझ लेते।'

यह अंश सिद्ध करता है कि खेल और व्यवहार में भाषा की भिन्नता बाधा नहीं बनती; बच्चे अलग-अलग बोलियों के होते हुए भी आपसी संवाद में सफल रहते हैं।

उत्तर: पाठ का वह अंश जिसमें राजस्थान-हरियाणा से आए बच्चे अलग बोली बोलते थे, फिर भी खेलते समय एक-दूसरे को खूब अच्छी तरह समझ लेते थे—यह सिद्ध करता है कि भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं बनती।

प्रश्न 2

पीटी साहब की 'शाबाश' फ़ौज के तमगों-सी क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।

हल

मास्टर प्रीतमचंद (पीटी साहब) बेहद कड़क और सख्त अध्यापक थे—उन जितना सख्त अध्यापक न कभी किसी ने देखा, न सुना था।

उनके डर से सभी लड़के काँपते थे; कोई जरा-सा सिर भी हिला लेता तो वह बाघ की तरह झपट पड़ते।

ऐसे कड़े और भयंकर अध्यापक से पूरे साल कभी शाबाशी मिलना असंभव-सा लगता था।

स्काउटिंग परेड में जब कोई गलती न होती तो वह 'शाबाश' कहते, जो बच्चों को ऐसे लगती 'जैसे हमने किसी फ़ौज के सभी तमगे जीत लिए हों।'

यही एक शाबाश साल भर की सभी कापियों पर लिखी 'गुडों' से अधिक मूल्यवान लगती थी।

भय और सख्ती के बीच मिली प्रशंसा का मूल्य कई गुना बढ़ जाता है—यही कारण है कि उनकी 'शाबाश' फ़ौजी तमगे जैसी लगती थी।

उत्तर: पीटी साहब की अत्यंत कड़क और भयावह छवि के कारण उनसे 'शाबाश' पाना फ़ौज के सभी तमगे जीतने जैसा लगता था—इतने कठोर व्यक्ति से मिली एक शाबाश का मूल्य असाधारण था।

प्रश्न 3

नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास हो उठता था?

हल

साधारणतः बच्चे अगली कक्षा में जाने पर उत्साहित होते हैं, परंतु लेखक को नयी कापियों और पुरानी किताबों की गंध से मन बहुत उदास हो जाता था।
इसके दो मुख्य कारण थे:
पहला—आगे की कक्षा में पढ़ाई अधिक कठिन होगी, यह भय।
दूसरा—नए मास्टरों की मार-पीट का डर, क्योंकि हर साल दो-तीन नए अध्यापक होते जो बड़ी अपेक्षाएँ रखते और न पूरा होने पर 'चमड़ी उधेड़ देने को तैयार रहते।'
लेखक ने मनोविज्ञान के आधार पर यह विश्लेषण किया कि पढ़ाई और मार-पीट का यह भय मन के भीतर गहरे जम गया था।
यह भय इतना प्रबल था कि किताबों-कापियों की गंध ही नहीं, स्कूल के रास्ते के अलिआर के झाड़ों की गंध भी मन उदास कर देती थी।

उत्तर: नयी कक्षा में कठिन पढ़ाई और नए-कड़े मास्टरों की मार-पीट का गहरा भय लेखक के बालमन में जम गया था, इसीलिए किताबों-कापियों की गंध भी उसे उदास कर देती थी।

प्रश्न 4

स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' फ़ौजी जवान क्यों समझने लगता था?

हल

स्काउटिंग परेड के समय मास्टर प्रीतमचंद बच्चों को धुली खाकी वर्दी और पालिश किए बूट पहनाकर नीली-पीली झंडियाँ हाथों में देते।
फिर 'वन टू थ्री' कहकर झंडियाँ ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ करवाते; हवा में फड़फड़ाती झंडियों के साथ गले में दोरंगे रूमाल लटकाए अभ्यास करते।
परेड में बूटों की ठक-ठक करते हुए राइट टर्न, लेफ्ट टर्न या अबाउट टर्न पर अकड़कर चलते।
यह पूरा दृश्य—वर्दी, बूट, झंडियाँ, मार्चिंग—बच्चों को फ़ौज का-सा अनुभव देता था।
द्वितीय विश्वयुद्ध का वातावरण था और फ़ौज का महत्त्व सर्वत्र था; इसी कारण परेड करते समय लेखक को लगता था—'हम विद्यार्थी नहीं, बहुत महत्त्वपूर्ण आदमी हैं—फ़ौजी जवान।'

उत्तर: खाकी वर्दी, पालिश किए बूट, रंगीन झंडियाँ और बूटों की ठक-ठक के साथ मार्चिंग करते समय लेखक को फ़ौजी जवान होने का-सा अहसास होता था, जो उसे अपने को महत्त्वपूर्ण 'आदमी' समझाता था।

प्रश्न 5

हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया?

हल

एक दिन पीटी साहब मास्टर प्रीतमचंद ने चौथी श्रेणी के बच्चों को फ़ारसी का एक शब्द-रूप याद न होने पर कठोर सजा दी।

उन्होंने बच्चों को टाँगों के पीछे से बाँहें निकालकर 'पीठ ऊँची करके कान पकड़ने' की सजा दी—जो तीन-चार मिनट में असहनीय पीड़ा देती थी।

उसी समय हेडमास्टर शर्मा जी हस्पताल से लौटकर दफ्तर के सामने आए और यह बर्बर दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए।

वह बहुत उत्तेजित हो गए और अंग्रेजी में चिल्लाए—'What are you doing, is it the way to punish the students of fourth class? Stop it at once.'

हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी प्रीतमचंद की इस बर्बरता को सहन न करते हुए उन्हें मुअत्तल (निलंबित) कर दिया और मंजूरी के लिए आदेश रियासत की राजधानी नाभा भेज दिया।

उत्तर: पीटी साहब ने चौथी कक्षा के बच्चों को पीठ ऊँची करके कान पकड़वाने की बर्बर सजा दी; हेडमास्टर शर्मा जी ने यह दृश्य देखकर इसे असहनीय माना और उन्हें तत्काल मुअत्तल कर दिया।

प्रश्न 6

लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा?

हल

लेखक को स्कूल खुशी से भागकर जाने की जगह नहीं लगती थी—पहली कच्ची से चौथी श्रेणी तक अधिकतर बच्चे रोते-चिल्लाते स्कूल जाते थे।

परंतु दो अवसरों पर स्कूल अच्छा लगने लगता था:

पहला—जब स्काउटिंग का अभ्यास होता था: पीटी साहब नीली-पीली झंडियाँ थमाकर परेड करवाते, और उनकी 'शाबाश' मिलने पर फ़ौजी तमगे जीतने जैसा आनंद आता।

दूसरा—जब परेड में बूटों की ठक-ठक के साथ मार्चिंग करते तो खाकी वर्दी में फ़ौजी जवान होने का अहसास होता।

सख्त पीटी साहब के भय और अनुशासन के बीच जब वे 'शाबाश' कहते, तो वह एक शाबाश साल भर की गुडों से अधिक मूल्यवान लगती—यही स्कूल अच्छा लगाने का कारण बना।

उत्तर: स्काउटिंग की परेड के दौरान—जब खाकी वर्दी में मार्चिंग करते और पीटी साहब की 'शाबाश' मिलती—तब लेखक को स्कूल जाना अच्छा लगता था; सख्त अध्यापक की प्रशंसा असाधारण रूप से मूल्यवान लगती थी।

प्रश्न 7

लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भाँति 'बहादुर' बनने की कल्पना किया करता था?

हल

गणित के मास्टर छुट्टियों में दो सौ से कम सवाल कभी नहीं बताते थे।
पहली योजना: लेखक सोचता—'यदि दस सवाल रोज निकाले तो बीस दिन में पूरे हो जाएँगे।' जब यह सोचना शुरू होता तो एक महीना छुट्टी बाकी होती, फिर दस दिन और खेल-कूद में बीत जाते।
दूसरी योजना जब पहली चूक जाती: 'दस की क्या बात, सवाल तो पंद्रह भी आसानी से रोज निकाले जा सकते हैं।' लेकिन छुट्टियाँ कम होते-होते भागने लगतीं।
जैसे-जैसे दिन छोटे लगने लगते और स्कूल खुलने का दिन नज़दीक आता, डर बढ़ता जाता।
तब वे अपने सहपाठी 'ओमा' की भाँति बहादुर बनने की कल्पना करते—जो छुट्टियों का काम करने की बजाय मास्टर की पिटाई को 'सस्ता सौदा' समझता था।
ओमा पूरे गुट का सबसे बड़ा 'नेता' था—उसकी तरह कोई न था; वह पिटाई से नहीं डरता था।

उत्तर: लेखक 'दस सवाल रोज़' और फिर 'पंद्रह सवाल रोज़' की योजनाएँ बनाता, जो खेल-कूद में बीतते दिनों के कारण कभी पूरी न होतीं; तब वह अपने साथी ओमा की भाँति 'बहादुर' बनकर मास्टर की पिटाई को 'सस्ता सौदा' मान लेने की कल्पना करता।

प्रश्न 8

पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

हल

1. अत्यंत कठोर और अनुशासनप्रिय: मास्टर प्रीतमचंद उन जितना सख्त अध्यापक न कोई देखा, न सुना। कोई सिर भी इधर-उधर हिलाए तो बाघ की तरह झपट पड़ते और 'खाल खींचने' के मुहावरे को साकार कर देते।
2. भयावह शारीरिक छवि: ठिगना कद, दुबला-पतला पर गठीला शरीर, माता के दागों से भरा चेहरा, बाज-सी तेज आँखें, खाकी वर्दी और खुरियों-कीलों वाले भारी बूट—सब कुछ भयभीत करने वाला।
3. कभी न मुस्कुराने वाले: स्कूल के समय में कभी भी उन्हें मुस्कुराते या हँसते नहीं देखा गया।
4. बर्बर दंड-व्यवहार: चौथी श्रेणी के बच्चों को पीठ ऊँची करके कान पकड़वाना—जो असहनीय पीड़ा देता था—उनकी क्रूरता की पराकाष्ठा थी।
5. स्काउटिंग में प्रेरक: परेड करवाते समय पूरी तत्परता और अनुशासन से 'वन टू थ्री' कहते; गलती न होने पर 'शाबाश' कहते जो बच्चों के लिए अमूल्य थी।
6. पशु-प्रेमी विरोधाभास: जो प्रीतमचंद बच्चों पर इतने कठोर थे, वे अपने पिंजरे के तोतों को बादाम खिलाकर मीठी बातें करते—यह उनके चरित्र का विरोधाभासी पहलू था।
7. निलंबन पर निर्लिप्तता: मुअत्तल होने के बाद भी उन्हें रत्ती भर चिंता नहीं थी—आराम से अपने चौबारे में तोतों से बातें करते रहे।

उत्तर: पीटी साहब अत्यंत कठोर, अनुशासनप्रिय, भयावह शारीरिक छवि वाले और बर्बर दंड देने वाले थे; परंतु स्काउटिंग में प्रेरक थे और अपने तोतों से अत्यंत स्नेही थे—यह विरोधाभास उनके चरित्र की विशेषता है।

प्रश्न 9

विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

हल

पाठ में अनुशासन की युक्तियाँ:
- मास्टर प्रीतमचंद (पीटी साहब) शारीरिक दंड देते थे—कान पकड़वाना, पीठ ऊँची करके खड़े रखना, मारपीट।
- कतार में खड़े बच्चों की हर हलचल पर नज़र रखना और जरा-सी गड़बड़ी पर सख्त कार्यवाही।
- परंतु हेडमास्टर शर्मा जी इसके विपरीत थे—वे कभी बर्बर दंड नहीं देते थे; अधिक से अधिक उल्टी उँगलियों से हल्की 'चपत' मारते, जो बच्चों को पीड़ा नहीं देती थी।

वर्तमान मान्यताएँ:
- आजकल स्कूलों में शारीरिक दंड पूरी तरह निषिद्ध है (पाठ में स्वयं यह टिप्पणी दी गई है—'आजकल स्कूलों में विद्यार्थियों को पीटना मना है')।
- वर्तमान बाल-मनोविज्ञान के अनुसार भय से नहीं, प्रेम और प्रोत्साहन से अनुशासन टिकाऊ होता है।
- पीटी साहब की 'शाबाश' ने जो प्रेरणा दी वह पिटाई से अधिक प्रभावशाली थी—यह स्वयं पाठ का सबक है।

निष्कर्ष: शारीरिक दंड अनुशासन नहीं, भय और नफ़रत पैदा करता है; सच्चा अनुशासन प्रोत्साहन, प्रेम और उचित मार्गदर्शन से आता है—जो हेडमास्टर शर्मा जी का तरीका था।

उत्तर: पाठ में शारीरिक दंड द्वारा अनुशासन रखा जाता था, जो आज पूर्णतः निषिद्ध है; वर्तमान मनोविज्ञान के अनुसार प्रेम, प्रोत्साहन और उचित मार्गदर्शन से स्थायी अनुशासन बनता है—पीटी साहब की 'शाबाश' स्वयं इसका प्रमाण है।